# जो साहेब सनकूल होवही, तो दुख आवे तिन

यद्यपि माया के दुख जंगल में स्वयं ही जलती-बुझती हुई दावानल की अग्नि की भांति इस सांसारिक तन को जलाने वाले प्रतीत होते हैं परन्तु आत्मिक दृष्टि से देखा जाये तो यही दुख सच्चे सुखों की पृष्ट भूमि तैयार करते हैं। इन दुखों की प्रशंसा किन शब्दों में की जाये जो रूह की नज़र खोल कर उसे इस तन के मोहपाश के बन्धन से धीरे-धीरे मुक्त करके मूल तनो के सम्बन्ध को प्राथमिकता देना सिखलाते हैं। चाह कर तो इस संसार में कोई दुख लेता नहीं और यह भी सच है कि आतम के अतिरिक्त कोई भी इन दुखों का स्वागत नहीं करता क्यों कि आतम ही पारब्रह्म का असल अंग होने के नाते से उस की अंगना नार है इसलिए आशिक कहलाती है। धनी के सच्चे आशिक ही इन दुखों के भीतर छिपे हुए मर्म को जान जाते हैं इसलिए इन सांसारिक दुखों को अनमोल मान कर गले से लगाते हैं।

और यह भी शतप्रतिशत सत्य है सुन्दर साथ जी - कि इन दुखों के भीतर ही अखण्ड सुखों का मर्म छिपा है - दुख तो एक परदा है आतम के सुख के लिए अखण्ड सुखों की भूमिका तैयार करने का क्यों कि इन दुखों के परदे में धनी ने अखण्ड सुखों को छिपा कर रख दिया है - दुखों के भीतर छिपे हुए मर्म को जो जान जाता है - वही अखण्ड सुख पाने का अधिकारी हो जाता है और जो इन दुखों का लाभ न उठाकर इन्हीं दुखों में डूब जाता है वह सांसारिक सुख और अखण्ड सुख दोनों से वंचित रह जाता है। संसार के सुख मृगतृष्णा की भांति अन्त में निराशा उत्पन्न करते हैं इसलिए ये सुख राज जी अपने प्यारों को नहीं देते। जो धनी के प्यारे मोमन हैं वे इस संसार में व्याप्त दुख-सुख के मर्म से परिचित हैं इसलिए इन दुखों का लाभ उठाते हैं क्योंकि ये दुख ही सच्चा आनन्द उपलब्ध करवा कर आतम को आनन्द प्रदान करते हैं।

'जो साहेब सनकूल होवही, तो दुख आवे तिन।
इन दुनियां में चाह कर, दुख न लिया किन।।'

*किरंतन प्रक. १७/३०*

हम सब सुन्दरसाथ इस खेल की वास्तविकता से तो भली-भांति परिचित हैं ही - यह खेल धनी के हुकम की कारीगरी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। अपनी ही अंगना को दुख का खेल दिखलाना है इसलिए खेल दिखलाते हुए दुखों के प्रवाह में कमी नहीं आने देते - परन्तु आतम को फूल पांखड़ी छुआने जितना भी कष्ट नहीं देते - शीतल दृष्टि की शीतलता के कोमल स्पर्श से जगाते हैं। यही कारण है कि इस खेल के दर्शक जिन के लिए यह खेल बनाया गया है - निर्देशक की इच्छा को जान जाते हैं इसलिए बड़े से बड़े दुख को भी अनमोल उपहार समझ कर गले से लगा लेते हैं। यह धनी की मेहर का कमाल नहीं तो और क्या है कि इस दुख की जिमी में बैठकर भी दुखों के



Nijanand App

ये शूल रूहों को फूलों की शीतलता का अनुभव करवा रहे हैं। वह इस प्रकार से कि जब रूहें इन दुखों को धनी की मेहर की दृष्टि से देखती हैं तो यह दुख-दुख नहीं रहता - बल्कि यूँ कहे कि यहीं दुख कायम सुख का अनुभव करवाता हुआ दिखाई देता है।

'इन दुख की जिमी में बैठ के, मेहरें देखें दुख दूर।
कायम सुख जो हक के, सो मेहर करत हजूर।।'

*'मेहर सागर'*

परमधाम से उतरी हुई आतम को दुख दिखलाना इसलिए भी आवश्यक है क्यों कि दुख का खेल वह राज जी से मांग कर आई है और यह भी सच है कि दुख को देखे बिना आतम इस खेल के रहस्य को समझ नहीं पायेगी। आतम का चलन जीव सृष्टि से बिल्कुल विपरीत है क्यों कि जीव सृष्टि तो दुख आने पर उससे छुटकारा पाने के लिए उपाय खोजती है परन्तु ब्रह्मसृष्टि इन दुखों को प्राणों से भी प्यारा धनी का उपहार समझ कर गले से लगा लेती है और यही नहीं उसे अनमोल धरोहर मान कर दिल के भीतर की पर्तों में छुपा कर रखती है कि कहीं यह दुख आंसू के रूप में अथवा जुबां के द्वारा दिल से जुदा न हो जायें। प्राणों से भी प्यारा यही सांसारिक दुख संसार की स्यानप को मिटा कर सच्चे आशिक का दीवानापन देता है - जिसके कारण विरह का जन्म होता है। इन दुखों में ही धनी का वास कहा गया है क्यों कि यही दुख आतम को अर्न्तमुखी बनाकर भीतर झांकना सिखलाते हैं।

ये दुख ही दिल रूपी धरती को आर्द्रता प्रदान करके उसे अंकुर फूटने योग्य उपजाऊ बनाते हैं। जिस प्रकार धरती में बीज बोने से लेकर अंकुर निकलने, पौधा बनने तक की प्रक्रिया में धरती का गीला होना आवश्यक है ठीक इसी प्रकार आतम के दिल में राज जी का प्रेम अंकुरित होने से लेकर उन से मिलन तक की प्रक्रिया में दुख अनिवार्य है। क्योंकि दुख के बिना दिल रूपी ज़मीन को आर्द्रता मिल नहीं पाती और शुष्क जमीन पर अंकुर फूटता नहीं। सर्वप्रथम तो इस जीव को ये दुख तनिक भी नहीं सुहाते परन्तु आतम की फरामोशी धीरे-धीरे समाप्त होते जाने की प्रक्रिया में पहले तो दुख-सुख समान दिखाई देते हैं - तत्पश्चात यहीं दुख अधिक प्रिय लगते हैं क्योंकि सहायक सिद्ध होते हैं। और यही दुख आतम को अखण्ड आनन्द की तलाश के लिए प्रेरित भी करते हैं। सच्चे सुखों की प्राप्ति का मार्ग भी कोई इतना आसान नहीं है जब इन्हें आतम पा लेना चाहती है और ये प्राप्त होते नहीं तो विरह की दीवानगी का जन्म होता है।

'बारीक बातें दुख की, जो कदी लगे मिठास।
तो टूट जात है ए सुख, होत माया को नास।।'

*किरंतन प्रक.० १७/२३*

राज जी ने अर्श से उतरी हुई अपनी अंगना को इस योग्य तो बना ही दिया है कि वह संसार के दुख-सुख का मूल्यांकन कर सके। यहां के दुख-सुख का मोल भी मन के मूल की भांति ही है। जब मन का मूल ही कुछ नहीं है तो इस मन के बनाये हुए संसार रूपी महल का क्या अस्तित्व होगा



Nijanand App

और जब यह संसार ही केवल मन के कारण भासता है तो मन से उपजे हुए दुख-सुख को हम क्यों महत्व पूर्ण बनायें। जो मन स्वयं कुछ भी नहीं है उसी मन की स्थितियां ही संसार के दुख-सुख को भारी या हल्का बनाती हैं। परन्तु जब धनी की मेहर की पहचान हो जाती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि माया के दुख राज जी की मेहर की कुछ बूंदें हैं - इन बूंदों का हमारे तन मन पर कितना प्रभाव होता है यदि माया का परदा हम हटा कर देखें तो पता चलेगा। ज़ब यह खेल ही मेहर का स्वरूप है रूहों को मेहर के स्वरूप की पहचान करवाने के लिए ही इस खेल की रचना हुई तो क्या धनी हमें दुख दे सकते हैं। राज जी तो अपनी रूहों को अपनी मेहर की छत्र-छाया में रखे हुए दुख-सुख का अनुभव करवा रहे हैं। यदि धनी की मेहर हम से जुदा हो जाये तो यह खेल अवश्य हमारे लिए ज़हर के समान हो जायेंगा - परन्तु ऐसा कैसे हो सकता है। जबकि यह खेल ही मेहर के वास्ते बना है।

'ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाएं सब मेहेर।
जाथे मेहर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर।।'

*मेहर सागर*

राज जी ने अखण्ड सुखों की लज्जत लेने के लिए ही इस खेल की रचना की है - वाणी का उपहार अपनी रूहों को दे कर उन्हें इस वाणी का मंथन करने को कहा है ताकि सच्चे सुखों की तरंगों के अनुभव से हम इस सपने का संग धीरे-धीरे छोड़ते जाएं और धनी के प्यार की गरिमा को इस झूठ में भी अपने दिल में बरकरार रखें परन्तु बंजर जिमी पर तो फूल उगता नहीं इसलिए सांसारिक दुखों की अनुभूतियों से इस ज़मीन को सींच कर उपजाऊ बना दिया अब विरह का बीज बोया तो प्रेम का अंकुर भी फूटेगा - जब यहीं अंकुर पौधा बनेगा तो धनी से मिलन रूपी फूल भी खिलेंगें।

"सुख मे तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर।
दुख आये सुख आवत, सो मेहर खोलत नजर।।"

*मेहर सागर*

धनी ने मेहर सागर के द्वारा अपने पूरे स्वरूप को अपनी ही अंगना आतम के समक्ष उजागर किया है। अपने ही आठो अंगों को आठों सागरों का रूप दे कर इन सागरों के रस को मेहर सागर में समाहित कर अपने स्वरूप की लज्जत का अनुभव आतम को करवाया है। उन का स्वरूप अति सुन्दर-सनकूल तथा सुकोमल है वे बाहर और भीतर समान रूप से सुन्दर हैं। उनके बाहरी आवरण की शोभा उनकी भीतरी सुन्दरता के कारण है। वे सर्वगुण सम्पन्न, अलरहीम - अलरहमान सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। जिन की दयालुता के कारण सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति प्राप्त होनी है - वे अपने ही अंग आत्माओं को किसी भी प्रकार का दुख कैसे दे सकते हैं? यदि प्रेम के स्वरूप पारब्रह्म से प्रेम हो जाये तो हम उनकी प्रत्येक इच्छा से भी प्रेम करने लगेंगे। जब दुख हमें दीवानगी की उस अवस्था तक पोहोंचा दे कि दुख में ही आनन्द आने लगे तो स्वाभाविक रूप से सुख जहर



Nijanand App

के समान लगेगा।

जिन्हें इस संसार में दुख ही दुख मिला उन्होंने शीघ्रता से झूठे संसार के मर्म को पा लिया। जब इस दुख रूपी संसार का मर्म समझ में आया तो यह दुख बिरह में परिवर्तित हो गया। फिर तों इस संसार के बस्तर, भूषण, साज-सज्जा, सिनगार, आचार-व्यवहार इत्यादि से आतम को वैराग होने लगा अर्थात इस संसार से आतम को कोई लगाव नहीं रहा। जब आठों प्रहर धनी का बिरह दिल में समा गया तो यही प्रिय लगने लगा। शरीर के दसों द्वारों के द्वारा रोम-रोम से नख से शिख तक तन-मन में जब यही विरह समा गया तो संसार के दुख आतम को क्या सतायेंगे? इसीलिए जो दुख धनी के लिए विरह उपजाये उस का तो हमें स्वागत करना चाहिए क्योंकि बिरह रस भी प्रेम का ही अंग है। संयोग पक्ष हो अथवा वियोग पक्ष दोनों ही प्रेम रस की बूंदे हैं।।

'दुख दसों द्वारा भेदिया, और दुख भेदियो रोम रोम।
यों नख शिख दुख प्यारो लगे, तो कहा करे छल भोम।।'

*किरंतन प्रक. १७/२१*

प्रणाम जी

कान्ता भगत पीतम पुरा, दिल्ली

## संवेदना संदेश

"श्रीमती लिली बहिनजी (उज्जैन) व श्री अनिल श्रीवास्तव के पिताजी श्री कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव (रिटायर्ड चीफ इंजीनियर) का धाम गमन २१ अगस्त प्रातः ५.३० बजे हो गया।

अपनी पारिवारिक परम्परा के अनुसार बचपन में ही तारतम मंत्र ले लिया और आखिर तक राजजी के ध्यान में ही रहे।

सरल स्वभाव के श्री के० एम० श्रीवास्तव बहुत ही सादा जीवन तथा त्याग की प्रति मूर्ति थे। वे लखनऊ के श्री प्राणनाथ मन्दिर ट्रस्ट के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वे ७८ वर्ष के थे। उनके धाम गमन के बाद लखनऊ मन्दिर व पन्नाजी में श्री कुलजम स्वरूप साहिब का अखंड पाठ पूरा हुआ। धाम दर्शन परिवार समस्त श्रीवास्तव परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है एवं धाम धनी से प्रार्थना करता है कि निजअंगना को अपने चरणों में स्थान देवे।

*धाम दर्शन*



Nijanand App